सम्पादकीय

परमात्मा की शक्ति से या परमात्मा के द्वारा

बहुत दिनों से जहन में यह प्रश्न घूम रहा है कि–

- ❖ क्या दुनिया का हर काम परमात्मा द्वारा ही किया जाता है?
- ❖ यदि हर काम परमात्मा द्वारा ही किया जाता है तो दुनिया में इतना अनाचार, भ्रष्टाचार व अत्याचार क्यों हैं?
- ❖ कहते हैं कि प्रभु जो करता है, अच्छा करता है। फिर तो अनाचार, भ्रष्टाचार व अत्याचार भी गलत नहीं हो सकते।
- ❖ आज का अखबार मेरे सामने है। बिहार के जमुई में रेलगाड़ी पर नक्सली हमला हुआ है। अनेक लोग मरे हैं। यदि उपर्युक्त बातें सही है तो यह हमला भी गलत नहीं हो सकता।

एक सवाल यह भी उभरता है कि –

- ❖ यदि सब कुछ परमात्मा के द्वारा ही हो रहा है तो फिर कर्म सुधारने की बात इन्सान को क्यूं कही जाती है?

हर धर्म हर ग्रन्थ और हर धर्म गुरु इन्सान को कर्म सुधारने की घुट्टी पिला रहा है, भले ही उसके अपने कर्म कैसे भी क्यूं न हों।ऐसी स्थिति में मेरे जैसा आदमी उलझ जाता है कि–

- ❖ दुनिया में यदि सर्वत्र पापाचार है तो उसका कर्ता इन्सान है या परमात्मा?

इस मुद्दे पर बहुत विचार किया और पाया कि इन्सान जो भी कर्म करता है, वह होता परमात्मा की शक्ति से ही है लेकिन उसका कर्ता इन्सान स्वयं है।

इस मामले पर थोंड़ा विचार करना होगा कि–

- ❖ परमात्मा के द्वारा होना या परमात्मा की शक्ति से होना– इन दोनों में क्या फर्क है?

यह समझ लीजिए कि किसी के हाथ में चाकू है। उस चाकू को वह किसी के पेट में मार देता है।
इस घटना में जो शक्ति प्रयोग की गयी है– चाकू उठाने और मारने की शक्ति, वह परमात्मा द्वारा प्रदान की गयी शक्ति है। इन्सान ने उस शक्ति का दुरुपयोग किया है। यदि वह उसी इन्सान को 'जादू की झप्पी' देता तो परमात्मा द्वारा दी गयी शक्ति का सदुपयोग होता । दोनों ही कर्मों का श्रेय इन्सान को जायेगा। यदि वह यश पायेगा तो अपने कर्मों के कारण, यदि सजा जायेगा तो भी अपने कर्मों के ही कारण।
हर मानव कर्म करने के लिए स्वतंत्र है– वह चाहे तो दान कर सकता है, चाहे तो चोरी। इस आधार पर किसी भी कर्म का कर्ता इन्सान स्वयं है इसीलिए हर धर्म इन्सान को अपने कर्म सुधारने का आदेश–उपदेश देता है।
इन्सान चूंकि नैतिकता, प्रेम व शान्ति आदि की बातों को प्रायः एक कान से सुनता है और दूसरे से निकाल देता है या उसे अपने विचारों तक लाकर छोड़ देता है–निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी के शब्दों में–
कानों से सुनी बात –

दिल में उतरी नहीं
और – गुफ़्तार हुई जाती है।

इस अवस्था में वह अच्छा उपदेशक अथवा वक्ता तो हो जाता है लेकिन उसका व्यवहार वैसा का वैसा ही बना रहता है। यही कारण है कि परमात्मा के सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान होते हुए भी अनाचार, भ्रष्टाचर व अत्याचार चलते रहते हैं। परमात्मा ने चूंकि स्वयं, इन्सान को कर्म करने की स्वतंत्रता दी है इसलिए

सर्वशक्तिमान होते हुए भी यह इसे 'ना करने योग्य' कर्मों को करने से रोकता नहीं है। अपनी मर्यादा में रहता है।
इस स्थिति में इन्सान जो चाहे करता रहता है।

- नैतिकता को जीवन में न ला पाने का एक कारण यह भी है कि इसमें इन्सान को आत्मनिरीक्षण और आत्म सुधार करना होता है। इसे करने के लिए मन से झगड़ा करना पड़ता है।

इन्सान चूंकि मन को ही सबसे ज्यादा चाहता है इसलिए स्वयं को मन के हवाले कर देता है और मन उसे यूं नचाता है जैसे बन्दर को मदारी। वह मोह–माया के बन्धनों से पार जा नहीं पाता इसलिए जीवन व्यतीत करके चला जाता है, अगली यात्रा पर। मुक्ति से उसकी दूरी यथावत बनी रहती है।
यहां एक प्रश्न और उभरता है कि यदि हर कर्म का कर्ता स्वयं है तो यह क्यूं कहा गया है–

तू कर्ता है जगत का——।

बात गहरी है। वास्तव में यह बात भक्तों के लिए है और भक्तों के द्वारा तथा भक्तों से ही कही है।
सार की बात यह है कि जो कर्तापन के मोह में नहीं पड़ते अर्थात् रहीम जी की तरह आचरण करते हैं कि–

देनहार कोऊ और है——।

ऐसे व्यक्ति मेहनत करने के बावजूद भी नाम के लालच में नहीं पड़ते। यदि किसी कारणवश श्रेय किसी और को मिल जाये तो उसे भी प्रभु की मर्जी मानकर सहज बने रहते हैं। वे अनासक्त भाव से कर्म करते हैं ओर स्वर्ग–नर्क दोनों के झंझट से बचकर अन्ततः मुक्ति का आनन्द लेते हैं। ऐसे व्यक्ति न कर्ता होते हैं, न ही भोक्ता कबीर जी के शब्दों में–

ज्यूं की त्यूं कर दीनी चदरिया——

उन्हें न जीवन से डर लगाता है न मृत्यु से। वे लोक में भी आनन्दित रहते हैं और परलोक में भी।
इस अवस्था में जो विचरण करते हैं, उनके बारे में महात्मा कहते हैं–

हैन विरले नहीं घणे– ——— तथा————

सिंहन के लहंडे नहीं, हंसन की नहीं पांत।
लालण की नहीं बोरियां, साधु न चले जमात।

कहते हैं कि ऐसे लोग सदा अल्प मात्रा में ही होते हैं। बात सही भी है क्यूं कि –

बहुत कठिन है डगर पनघट की।

यह डगर आसान कैसे होती है? बाबा गुरबचन सिहं जी के शब्दों में– जैसे किसी बैंक का कैशियर बहुत धन आने पर प्रसन्न नहीं होता और बहुत धन निकल जाने पर दुखी नहीं होता (क्यूं कि उसे पता होता है कि यदि ज्यादा धन आया है तो बैंक में आया है और ज्यादा धन गया है तो बैंक का गया है। उसे तो उसकी तनख्वाह ही मिलनी है।)
यह कैशियर आसक्त नहीं है। विरक्त भी नहीं है क्यूं कि अपनी ड्यूटी पूरी निभा रहा है। वह अनासक्त है। इन्सान को ऐसा ही जीवन जीना चाहिए।
मुझे लगता है कि समाधान हो गया है– दुनिया का हर कार्य परमात्मा की शक्ति से जरुर होता है लेकिन होता स्वयं इन्सान के द्वारा है।

▪ राम कुमार 'सेवक'

rksewak@yahoo.co.in